



जीविका समाचार पत्रिका

॥ माह – अक्टूबर 2020 ॥ अंक-03 ॥ केवल आंतरिक वितरण हेतु॥

जीविका

ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...



परिवार का संबल बनी बूचन दीदी
(पृष्ठ - 02)



सही पोषण के लिए मुन्नी दीदी
दे रही घर-घर दस्तक
(पृष्ठ - 03)



पोषण अभियान
(1-30 सितम्बर, 2020)
(पृष्ठ - 04)

वर्चुअल जॉब फेयर

कोरोना काल में युवाओं को मिला रोजगार

वैश्विक महामारी कोरोना की रोक थाम हेतु घोषित देशव्यापी लॉकडाउन की वजह से आर्थिक क्रियाकलाप सुस्त पड़ गए। इससे सभी क्षेत्रों में रोजगार बुरी तरह प्रभावित हुए। बड़े पैमाने पर लोगों को अपनी नौकरियां गंवानी पड़ी जबकि नई नौकरियों के द्वार बंद हो गए। ऐसे दौर में नई नौकरी को लेकर चिंतित युवाओं में जीविका के प्रयासों ने नई उम्मीद जगाई है। वर्चुअल जॉब फेयर का आयोजन कर जीविका ने ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार पाने का अवसर प्रदान किया है। कोरोना संक्रमण से जुड़ी चिंताओं के बीच युवाओं को सुरक्षित तरीके से रोजगार के अवसर प्रदान कराना इसका मुख्य उद्देश्य रहा। लॉकडाउन भले ही खत्म हो गया है, लेकिन देश में कोरोना संक्रमण की स्थिति बनी हुई है। ऐसे में, युवाओं के लिए रोजगार की तलाश हेतु घर से बाहर निकलना उनके लिए खतरनाक साबित हो सकता था। इसको देखते हुए जीविका ने 7 सितंबर 2020 को प्रदेश भर में दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए वर्चुअल जॉब फेयर का 'मंच' प्रदान किया। जहां एक ओर प्रशिक्षित युवाओं ने डिजिटल माध्यम से अपनी व्यक्तिगत एवं शैक्षणिक जानकारी तथा अपनी कार्य रुचि के साथ विभिन्न नियोक्ता कंपनियों के साथ साझा की। वहीं, नियोक्ता कंपनियों ने भी डिजिटल माध्यम से अपनी आवश्यकता के अनुसार युवाओं की अन्तर्वीक्षा सम्पादित की और नियुक्ति प्रक्रिया को पूरा किया। इस वर्चुअल जॉब फेयर में लॉजिस्टिक, सिक्युरिटी, मार्केटिंग आदि क्षेत्रों से जुड़ी कई कंपनियों ने भाग लिया। नियोक्ता कंपनियों ने वर्चुअल जॉब फेयर में पहले चरण की प्रक्रिया पूरी कर, अगले चरण की स्क्रीनिंग हेतु चयनित योग्य युवाओं को आमंत्रित किया है। युवाओं के अंतिम चयन हेतु भी वर्चुअल माध्यम का ही सहारा लिया जा रहा है। जीविका के ऐसे प्रयास ने प्रशिक्षित युवाओं के रोजगार के लिए अवसर उपलब्ध कराने के साथ ही कोरोना संक्रमण के इस दौर में उनकी स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को भी कम किया है।

वर्चुअल जॉब फेयर आयोजित करने की प्रक्रिया एवं घटक:

1. स्थान का चयन: वर्चुअल जॉब फेयर आयोजित करने के लिए सबसे पहले स्थान का चयन किया जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक युवाओं के सम्मिलित होने की स्थिति में भी सोशल डिस्टेंसिंग का पालन किया जा सके।
2. युवाओं का उन्मुखीकरण: वर्चुअल जॉब फेयर में हिस्सा लेने हेतु ऐसे प्रशिक्षित युवाओं का चयन किया गया, जो दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत विभिन्न विधाओं में प्रशिक्षित हो चुके हैं। ऐसे युवाओं से विभिन्न माध्यमों से संपर्क कर प्रशिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधि, रोजगार संसाधन सेवी और जीविकाकर्मियों द्वारा उन्हें प्रेरित किया गया ताकि वे वर्चुअल जॉब फेयर में हिस्सा ले सकें।
3. मास्क, सेनिटाइजर एवं ग्लब्स का प्रयोग: वर्चुअल जॉब फेयर में उपस्थित होने वाले सभी प्रतिभागियों, रोजगार साधन सेवियों एवं जीविकाकर्मियों को मास्क, हैण्ड-वॉश तथा सेनिटाइजर दिये गए। साथ ही आयोजन स्थल पर सोशल डिस्टेंसिंग का पूर्णतः अनुपालन किया गया।
4. युवाओं का निबंधन: प्रथमतः उपस्थित युवाओं का निबंधन किया गया, जिसमें उनसे सम्बंधित अपेक्षित जानकारी को दर्ज किया गया।
5. रोजगार हेतु परामर्श: वहां उपस्थित युवाओं को रोजगार क्षेत्र और उससे जुड़े अवसरों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।
6. डिजिटल माध्यमों की उपलब्धता: वर्चुअल जॉब फेयर आयोजित करने के पूर्व डिजिटल माध्यमों यथा- कंप्यूटर, इंटरनेट, प्रोजेक्टर, स्कैनर, स्पीकर आदि की उपलब्धता सुनिश्चित की गई।



परिवार का संभल खनी बुचन दीदी

बुचन देवी शिवगुरु जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। बुचन बताती हैं कि पति परदेश में नौकरी करते थे। 2-3 माह के अंतराल पर घर चलाने के लिए कुछ रुपये भेज दिया करते थे जिससे गुजारा मुश्किल से हो पाता था। बुचन ने अपनी परेशानी समूह की महिलाओं को बताई। समूह ने ग्राम संगठन से सलाह लेकर बुचन को फल की दुकान खोलने की सलाह दी। इसके अतिरिक्त समूह से 30 हजार रुपये ऋण की भी स्वीकृति दी गई। बक्सर के कोरानसराय चौरास्ता पर सड़क के किनारे नगर परिषद् से अनुमति लेकर दुकान शुरू करने का निश्चय किया गया और बुचन ने अक्टूबर 2016 में फल की दुकान खोली। पर्व का मौसम होने से दुकान में अच्छी विक्री हुई। इसी बीच बुचन के पति भी गाँव आये हुए थे। अपनी छुट्टियों में दुकान पर रहकर वे बुचन की मदद करने लगे। इससे अधिक लाभ हुआ तब बुचन ने अपने पति को परदेश न जाने की सलाह दी और कहा कि दुकान चलाने में वे उसकी मदद करें। प्रारंभिक आनाकानी के बाद पति मान गए और दुकान में मदद करने लगे। अब बुचन के पति थोक भाव में मुख्य बाजार से फल खरीद कर लाते हैं और बुचन उसे खुदरा भाव से बेचती है। शुद्ध मुनाफा महीने का आठ से दस हजार रुपया हो जाता है। पर्व-त्यौहार के समय मुनाफा पंद्रह से बीस हजार रुपया भी हो जाता है। इनके बच्चे स्कूल जाने लगे हैं। बुचन इस बात से खुश है कि समय पर समूह ने सही सलाह और ऋण देकर इन्हें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बना दिया। अपने परिवार का संभल होने के अतिरिक्त वह दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत भी हैं।



प्रवासियों को मिला रोजगार का अलंकार

कोरोना संकमण को अवसर में बदलने का कार्य जीविका दीदियों ने किया है। समस्तीपुर की दीदियों ने प्रवासियों के साथ बैठक कर उनके लिए रोजगार एवं अन्य सुविधाओं की उपलब्धता पर कार्य आरंभ किया।

इस क्रम में ताजपुर प्रखंड के मुरादपुर बंगरा निवासी मो. सद्दाम जो पूर्व में दिल्ली में सिलाई का काम करते थे कोरोना के कारण बेरोजगार हो गए और अपने गांव आ गए। उनकी मां पूर्व से जीविका से जुड़ी थीं। उनके साथ उन्होंने स्वरोजगार पर चर्चा की। माँ के प्रयास से सद्दाम ने अपनी सिलाई-कटाई में अपनी प्रवीणता से जीविकाकर्मियों एवं दीदियों को अवगत कराया। उनके कौशल को देखते हुए समूह की दीदियों ने उनके उद्योग के प्रति अपनी सकारात्मकता की मुहर लगा दी। इसके बाद उन्होंने अपना प्रोफाइल भरकर इस्लामिया जीविका स्वयं सहायता समूह, जिससे उनकी मां जुड़ी थीं, में दिया। समूह द्वारा उन्हें 50 हजार रुपया ऋण के रूप में उपलब्ध कराया गया। उन्होंने अपना काम आरंभ किया।

सद्दाम ने अपने साथ तीन अन्य प्रवासियों को भी काम दिया। सद्दाम महिलाओं के लिए विभिन्न परिधानों का निर्माण कर रहे हैं। धीरे-धीरे उनके उत्पादों की बिक्री होने लगी है। सद्दाम कहते हैं कि जैसे-जैसे उनके उत्पादों की मांग बढ़ेगी, वैसे-वैसे वे अधिकाधिक प्रवासी कामगारों को रोजगार उपलब्ध करायेंगे। सद्दाम एवं उनके साथ कार्य करने वालों के जीवन पटरी पर आ चुके हैं।



खाद्यान्न समस्या के समाधान की दिशा में आर्थिक पहल

महानंदा नदी के समीप पूर्णियाँ जिला अन्तर्गत बैसा प्रखण्ड में कुल 13 जीविका स्वयं सहायता समूहों को मिलाकर 'संगम जीविका महिला ग्राम संगठन' का गठन हुआ है। इस वर्ष 2020 के मार्च महीने में कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन होने के उपरांत कई परिवारों के सामने खाद्यान्न की समस्या उत्पन्न हुई। जो लोग बाहर रहकर मजदूरी करने वाले थे, देश भर में बंदी होने के कारण बेरोजगार हो गये। स्थानीय स्तर पर भी रोजगार की समस्या उत्पन्न हो गयी। दीदियों ने ग्राम संगठन की बैठक कर चावल की खरीदारी करने का निर्णय लिया। सदस्यों का माइक्रो प्लानिंग कर क्रय की जाने वाली मात्रा का आकलन करने एवं चावल का नमूना और दर हेतु बाजार सर्वेक्षण ग्राम संगठन की खरीदारी उपसमिति द्वारा करने तथा प्राप्त नमूना के आधार पर उचित मूल्य पर चावल खरीदने का निर्णय लिया गया। खरीदारी उपसमिति की सदस्यों ने गाँव से 22 किलोमीटर दूर स्थित किशनगंज बाजार से जाकर चावल खरीदने का निर्णय लिया। खरीदारी उपसमिति की सदस्यों ने बाजार सर्वेक्षण कर तीन दुकानों से चावल का नमूना लाया। नमूना का आकलन कर दीदियों द्वारा एक दुकान से चावल खरीदने का निर्णय लिया और कुल पैतीस क्विंटल चावल की खरीदारी की गई जिसका भुगतान चेक के माध्यम से किया गया। खरीदारी के बाद माँग के अनुसार जरूरत मंद परिवारों के बीच चावल वितरित किया गया। इस प्रकार, ग्राम संगठन अपने उन सदस्यों को जो खाद्यान्न की समस्या से जूझ रही थीं कि खाद्यान्न समस्या का समाधान कर दिया।

सही पोषण के लिए मुन्नी दीदी दे रही घर-घर दस्तक

सुबह के 8 बजे किसी के आने की आहट सुन इन्दु चौका-चूल्हा छोड़ अपने दुधमुँहे बच्चे को गोद में लिए झटकते हुए दरवाजे पर पहुंची। वहां मुन्नी दीदी और उनके साथ दो अन्य जीविका दीदियाँ खड़ी थीं। सामान्य शिष्टाचार के बाद इन्दु ने उनके आने का कारण पूछा। मुन्नी देवी ने इन्दु देवी की गोद में खेल रहे बच्चे को दुलार करते हुए पूछा- 'इन्दु दीदी, आपके बच्चा की उम्र कितनी है?' इन्दु ने कहा- '4 माह'। फिर उन्होंने पूछा, क्या आप बच्चा को अभी भी स्तनपान कराती हैं?' प्रश्न सुन कर इन्दु देवी ने 'ना' कहते हुए सिर हिलाया। उत्तर सुनकर मुन्नी देवी चिंतित हुई। इसके बाद मुन्नी देवी ने कहा, 'दीदी, 6 माह तक के बच्चों को स्तनपान कराना बहुत जरूरी है। इससे बच्चों के पोषण में मदद मिलती है और उसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। इसलिए आपको अपने बच्चे के स्वस्थ जीवन के लिए नियमित स्तन पान कराना चाहिए।' मुन्नी देवी की बात सुनकर इन्दु दीदी ने अपनी गलती को मानते हुए दीदियों को आश्वासन दिया कि वह आगे से अपने बच्चे को नियमित स्तन-पान कराएंगी।

मुन्नी देवी ने 6 से 23 माह तक के बच्चों के उपयुक्त पूरक आहार के बारे में भी इन्दु दीदी को जानकारी दी। इसके अतिरिक्त उसने 'मां' को भी पौष्टिक आहार लेने की आवश्यकता एवं विभिन्न प्रकार के खाद्य समूहों के बारे में विस्तार से बताया। जिसके बाद इन्दु देवी ने सभी सुझावों को मानने का आश्वासन मुन्नी देवी को दिया





पोषण अभियान (1-30 सितम्बर, 2020)

वर्तमान में बिहार राज्य के बच्चों एवं महिलाओं के बीच कुपोषण स्वस्थ जीवन एवं आजीविका के लिए बड़ी बाधा है। इसमें आवश्यक सुधार के लिए आहार विविधता अपनाकर आवश्यक परिवर्तन लाया जा सकता है। जीविका परियोजना में स्वयं सहायता समूहों और उनके ग्राम संगठनों द्वारा आजीविका संवर्धन के साथ ही समुदाय में स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता पर जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन के लिए लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। इन प्रयासों को और मजबूती देने के लिए ग्राम संगठन स्तर पर पारिवारिक आहार विविधता अभियान आयोजित किया जा रहा है। इसके तहत वर्तमान सितम्बर माह में राष्ट्रीय पोषण माह-2020 (01 से 30 सितम्बर' 2020) मनाया जा रहा है।

अभियान हेतु लक्षित वर्ग गर्भवती एवं धात्री माताएँ (0-6 माह के बच्चों की माताएँ) एवं 6-23 माह के बच्चों की माताएँ हैं एवं इसका संचालन ग्राम संगठन के द्वारा किया जा रहा है।

इस अभियान में पोषण के पंच सूत्रों (पाँच विषयों) को शामिल किया गया है :-

- 1. स्तनपान :** जन्म के तुरंत बाद एवं 6 माह तक मात्र माँ का दूध और इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं।
- 2. पूरक आहार :** 6 माह पूरा होते ही बच्चों को पूरक आहार देना चाहिए। 7 खाद्य समूहों में से कम से कम 4 खाद्य समूहों को शामिल कर बच्चों के लिए पूरक आहार बनाना चाहिए।
- 3. माताओं के लिए खाद्य विविधता :** 10 में से कम से कम 5 खाद्य समूह का खाना खाना चाहिए।
- 4. पोषण-बगीचा :** प्रत्येक घर में पोषण बगीचा लगाना ताकि प्रत्येक मौसम में कम से कम तीन फल या सब्जी मिल सके।
- 5. हाथों की स्वच्छता एवं शौचालय का उपयोग :** खाना बनाने, खाने एवं बच्चों को खिलाने से पहले साबुन से हाथ धोना चाहिए। परिवार के सभी सदस्यों को साबुन से कम से कम 40 सेकेंड तक बराबर हाथ धोना चाहिए।



अभियान की मुख्य गतिविधियाँ: पोषण पंचसूत्र पर सभी स्वयं सहायता समूहों में चर्चा कर लाभार्थियों की सूची का निर्माण करना तथा उन चिह्नित लाभार्थियों का ग्राम संगठन की स्वास्थ्य उप-समिति की दीदियों द्वारा गृह भ्रमण कर पुनः जागरूक करना है। गृह भ्रमण के दौरान लीफलेट के माध्यम से खाद्य समूहों की जानकारी दी जाती है। साथ ही, खाद्य समूहों से सम्बंधित स्टीकर भी लाभार्थियों के घर चिपकाया जाता है। इसी दौरान उस घर में उपलब्ध खाद्य सामग्री का प्रदर्शन भी किया जाता है। अभियान के दौरान सभी लोग हाथों की सफाई, सामाजिक दूरी, मास्क का उपयोग एवं आवश्यकतानुसार सेनिटाईजर का भी प्रयोग करना सुनिश्चित कर रहे हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन - 2, बेली रोड, पटना - 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम

- श्री ब्रज किशोर पाठक - विशेष कार्य पदाधिकारी
- श्रीमती महुआ राय चौधरी - कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी - परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम

- श्री राजीव रंजन - प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन - प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री बिप्लव सरकार - प्रबंधक संचार, कटिहार

- श्री रोशन कुमार - प्रबंधक संचार, बक्सर
- श्री विकास राव - प्रबंधक संचार, सुपौल